सिया जुम्मा, कत्थ वि अणुक्कस्सपदविसेसे दुविहसमसंखदंसणादो। सिया ओमा, कत्थ वि हाणीदो समुप्पण्णअणुक्कस्सपदुवलंभादो। सिया विसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढीदो अणुक्कस्सपदुप्पत्तीए। सिया णोम-णोविसिट्ठा, अणुक्कस्सजहण्णम्मि अणुक्कस्सपद-विसेसे वा अप्पिदे वड्ढि-हाणीणमभावादो। एवं णाणावरणाणुक्कस्सवेयणा एक्कारस-पदप्पिया। ११।। एवं तदियसुत्तपरूवणा कदा।

संपहि चउत्थसुत्तपरूवणा कीरदे। तं जहा- जहण्णणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, अणुक्कस्सजहण्णस्स ओघजहण्णेण एगत्तदंसणादो। सिया सादिया, अजहण्णादो जहण्णपदुप्पत्तीए। सिया अणादिया त्ति णत्थि, सुहुमसांपराइयचरिम-समयबंधम्मि ✿ चरिमसमयखीणकसायसंतम्मि य दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे वि अणादित्ताणुवलंभादो। सिया अद्धुवा। सिया कलिओजा, खीणकसायचरिमसमय-ट्ठिदिग्गहणादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवं जहण्णकालवेयणा पंचपयारा सरूवेण छप्पयारा वा। ५।। एवं चउत्थसुत्तपरूवणा कदा।

संपहि पंचमसुत्तपरूवणा कीरदे। तं जहा- अजहण्णा णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, अजहण्णुक्कस्सस्स ओघुक्कस्सादो पुधत्ताणुवलंभादो। सिया अणुक्कस्सा,

---

सम संख्यायें देखी जाती हैं। कथंचित् वह ओम है, क्योंकि, कहींपर हानिसे उत्पन्न हुआ अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है। कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर वृद्धिसे अनुत्कृष्ट पद उत्पन्न होता है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, अनुत्कृष्टभूत जघन्य पदकी अथवा अन्य अनुत्कृष्ट पदविशेषकी विवक्षा करनेपर वृद्धि और हानिका अभाव रहता है। इस प्रकार ज्ञानावरणकी अनुत्कृष्टवेदना ग्यारह (११) पद स्वरूप है। इस प्रकार तीसरे सूत्रकी प्ररूपणा की गई है।

अब चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है – जघन्य ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि अनुत्कृष्ट जघन्यकी ओघजघन्यसे एकता देखी जाती है। कथंचित् वह सादि है, क्योंकि अजघन्यसे जघन्य पद उत्पन्न होता है। कथंचित् अनादि यह पद नहीं हैं, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय सम्बन्धी बन्ध और क्षीणकषायके अन्तिम समय सम्बन्धी सत्वमें द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर भी अनादिपना नहीं पाया जाता। कथंचित् वह अध्रुव है। कथंचित् वह कलिओज है, क्योंकि, क्षीणकषायके अन्तिम समय सम्बन्धी स्थितिका ग्रहण किया गया है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है। इस प्रकार जघन्य कालवेदना पांच (५) प्रकार अथवा अपने साथ छह प्रकार भी है। इस प्रकार चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा की गई है।

अब पांचवें सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है – अजघन्य ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, अजघन्य उत्कृष्ट ओघ उत्कृष्टसे पृथक् नहीं पाया जाता है। कथंचित् वह अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, वह उसका

✿ अ-काप्रत्योः 'चरिमसमयसमयबंधम्मि' इति पाठः।

तदविणाभावित्तादो । सिया सादिया, पदंतरपल्लट्टणेण विणा अजहण्णपदविसेसाण- मवट्ठाणाभावादो । सिया अणादिया, दव्वट्ठियणए अवलंबिदे बंधाभावादो । सिया धुवा, दव्वट्ठियणए अवलंबिदे अजहण्णपदस्स विणासाभावादो । सिया अद्धुवा, पज्जवट्ठियणए अवलंबिदे धुवत्ताभावादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा । सुगमं । सिया णोम-णोविसिट्ठा, णिरुद्धपदविसेसत्तादो । एवमजहण्णा एक्कारसभंगा । ११ । । एसो पंचमसुत्तत्थो ।

सादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया अद्धुवा । धुवा ण होदि, सादियस्स अणादिय-धुवत्तविरोहादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवं सादियवेदणाए दसभंगा । १० । । एसो छट्ठसुत्तत्थो । अणादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । कधमणादियवेयणाए सादियत्तं? ण, वेयणासामण्णावेक्खाए अणादियम्मि उक्कस्सादिपदावेक्खाए सादियत्तं पडि विरोहाभावादो । सिया धुवा,

---

अविनाभावी है । कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, दूसरे पदोंके पलटनेके विना अजघन्य पद-विशेष रहते नहीं है । कथंचित् अनादि हैं, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर इस पदका बन्ध नहीं होता । कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अजघन्य पदका विनाश नहीं होता । कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर उसके ध्रुवपना नहीं पाया जाता । कथंचित् वह ओज है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओघ है, और कथंचित् वह विशिष्ट है । यह सब सुगम है । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, पदविशेषकी विवक्षा है । इस प्रकार अजघन्य वेदनाके (११) भंग होते हैं । यह पांचवें सूत्रका अर्थ है ।

सादि ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, और कथंचित् अध्रुव है । वह ध्रुव नहीं है, क्योंकि, सादि पदका अनादि और ध्रुव पदके साथ विरोध है । वह कथंचित् ओज है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार सादिवेदनाके दस (१०) भंग होते हैं । यह छठे सूत्रका अर्थ है ।

अनादि ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य और कथंचित् सादि है ।

शंका- अनादि वेदना सादि कैसे हो सकती है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, वेदनासामान्यकी अपेक्षा उसके अनादि होनेपर भी उत्कृष्ट आदि पदोंकी अपेक्षा उसके सादि होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

वेयणासामण्णस्स विणासाभावादो । सिया अद्धुवा, पदविसेसस्स विणासदंसणादो । अणादियत्तम्मि सामण्णविवक्खाए समुप्पण्णम्मि कधं पदविसेससंभवो ? ण, सगंतोखित्तअसेसविसेसम्मि सामण्णम्मि अप्पिदे तदविरोहादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवमणादियपदस्स बारस भंगा ।१२। । एसो सत्तमसुत्तत्थो ।

धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवं धुवपदस्स बारस भंगा ।१२। । एसो अट्ठमसुत्तत्थो ।

अद्धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सियाविसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवमद्धुवपदस्स दस भंगा । १० । । एसो णवमसुत्तत्थो ।

ओजणाणावरणीयवेयणा उक्कस्सा ण होदि, उक्कस्सट्ठिदीए कदजुम्मे अवट्ठाणादो । सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । सिया अणादिया, सामण्णविवक्खादो । सिया धुवा, सिया अद्धुवा, विसेसविवक्खाए । सिया ओमा, सिया

कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, वेदनासामान्यका कभी विनाश नहीं होता । कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, पदविशेषका विनाश देखा जाता है ।

शंका – सामान्य विवक्षासे अनादिताके स्वीकार करनेपर उसमें पदविशेषकी सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अपने भीतर समस्त विशेषोंको रखनेवाले सामान्यकी विवक्षा करनेपर उसमें कोई विरोध नहीं है ।

वह कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अनादि पदके बारह (१२) भंग होते हैं । यह सातवें सूत्रका अर्थ है ।

ध्रुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार ध्रुव पदके बारह भंग होते हैं । यह आठवें सूत्रका अर्थ है ।

अध्रुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अध्रुव पदके दस (१०) भंग होते हैं । यह नौवें सूत्रका अर्थ है ।

ओज ज्ञानावरणीयवेदना उत्कृष्ट नहीं होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिका अवस्थान कृतयुग्ममें है । वह कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, व कथंचित् सादि है । सामान्यकी विवक्षासे वह कथंचित् अनादि है । वह कथंचित् ध्रुव है । वह कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, विशेषकी विवक्षा है । वह कथंचित् ओम,

विसिट्ठा, सिया णोम णोविसिट्ठा । एवमोजपदस्स दस भंगा ।१०। । एसो दसमसुत्तत्थो ।

जुम्मा णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोम-णोविसिट्ठा । एवं जुम्मपदस्स दस भंगा ।१०। । एसो एक्कारसमसुत्तत्थो ।

ओमणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा सिया ओजा, सिया जुम्मा । एव-मोमपदस्स अट्ठ भंगा । ८ । । एसो बारसमसुत्तत्थो ।

विसिट्ठणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवं विसिट्ठपदस्स अट्ठभंगा । ८ । । एसो तेरसमसुत्तत्थो ।

णोम-णोविसिट्ठणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सिया, सिया अणुक्कस्सिया, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवं दस भंगा ।१०। । एसो चोद्दसमसुत्तत्थो ।

एदेसिं भंगाणमंकविण्णासो एसो-- । १३ । ५ । ११ । ५ । ११ । १० । १२ । १२ । १० । १० । १० । ८ । ८ । १० ।

कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट हैं । इस प्रकार ओज पदके दस (१०) भंग होते हैं । यह दसवें सूत्रका अर्थ है ।

युग्म ज्ञानावरणीयवेदना कथञ्चित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार युग्म पदके दस (१०) भंग होते हैं । यह ग्यारहवें सूत्रका अर्थ है ।

ओम ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार ओम पदके आठ (८) भंग होते हैं । यह बारहवें सूत्रका अर्थ है ।

विशिष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथचित् अजघन्य, कथचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार विशिष्ट पदके आठ (८) भंग होते हैं । यह तेरहवें सूत्रका अर्थ है ।

नोम-नोविशिष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथचित् युग्म है । इस प्रकार उसके दस (१०) भग होते हैं । यह चौदहवें सूत्रका अर्थ है ।

इन भंगोंके अंकोंका विन्यास यह है-- १३+५+११+५+११+१०+१२+१२+१०+१०+१०+८+८+१० = १३५ ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ ५ ॥

जहा णाणावरणीयस्स पदमीमांसा कदा तहा सत्तण्णं कम्माणं कायव्वा, विसेसाभावादो । एवमंतोकयओजाणुयोगद्दारा पदमीमांसा त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

सामित्तं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्सपदे ॥ ६ ॥

तत्थ जहण्णं चउव्विहं– णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावजहण्णं चेदि । णामजहण्णं ट्ठवणाजहण्णं च सुगमं । दव्वजहण्णं दुविहं– आगमदव्वजहण्णं णोआगमदव्वजहण्णं चेदि । तत्थ जहण्णपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वजहण्णं । णोआगमदव्वजहण्णं तिविहं जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तणोआगमदव्वजहण्णभेएण । जाणुगसरीरं भवियं गदं । तव्वदिरित्तणोआगमदव्वजहण्णं दुविहं ओघजहण्णमादेसजहण्णं चेदि । तत्थ ओघजहण्णं चउव्विहं– दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्व-जहण्णमेगो परमाणू । खेत्तजहण्णमेगो आगासपदेसो । कालजहण्णमेगो समओ । भावजहण्णं परमाणुम्हि एगो णिद्धत्तगुणो । आदेसजहण्णं पि दव्व -खेत्त--काल-भावेहि चउव्विहं । तत्थ दव्वदो आदेसजहण्णं उच्चदे । तं जहा– तिपदेसियक्खंधं दट्ठूण दुपदेसियक्खंधो आदेसदो दव्व----

---

इसी प्रकार शेष सातों कर्मोंके उत्कृष्ट आदि पदोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ ५ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणकी पदमीमांसा की गई है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी पदमीमांसा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं हैं । इस प्रकार ओजानुयोगद्वार-गर्भित पदमीमांसा नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

स्वामित्व दो प्रकार है – जघन्य पदमें और उत्कृष्ट पदमें ॥ ६ ॥

उनमेसे जघन्य पद चार प्रकार है– नामजघन्य, स्थापनाजघन्य द्रव्यजघन्य और भावजघन्य । इनमें नामजघन्य और स्थापनाजघन्य सुगम हैं । द्रव्यजघन्य दो प्रकार है– आगमद्रव्यजघन्य और नोआगमद्रव्यजघन्य । उनमें जघन्य प्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यजघन्य है । नोआगमद्रव्यजघन्य तीन प्रकार है– ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्य-जघन्य, भावी नोआगमद्रव्यजघन्य और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघन्य । इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यजघन्य विदित हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघन्य दो प्रकार है– ओघजघन्य और आदेशजघन्य । उनमें द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षासे ओघजघन्य चार प्रकार है । इनमेंसे एक परमाणुको द्रव्यजघन्य कहा जाता है । एक आकाशप्रदेश क्षेत्र-जघन्य है । कालजघन्य एक समय है । परमाणुमें रहनेवाला एक स्निग्धत्व गुण भावजघन्य है ।

आदेशजघन्य भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है । इनमें द्रव्यसे आदेशजघन्यकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है– तीन प्रदेश–

जहण्णं। एवं सेसेसु वि णेयव्वं। तिपदेसोगाढदव्वं दट्ठूण दुपदेसोगाढदव्वं खेत्तदो आदेसजहण्णं। एवं सेसेसु वि णेयव्वं। तिसमयपरिणदं दट्ठूण दुसमयपरिणदं दव्वमादेसदो कालजहण्णं। एवं सेसेसु वि णेयव्वं। तिगुणपरिणदं दव्वं दट्ठूण दुगुणपरिणदं दव्वं भावदो आदेसजहण्णं। भावजहण्णं दुविहं- आगमभावजहण्णं णोआगमभावजहण्णं चेदि। तत्थ जहण्णपाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभावजहण्णं सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तयस्स जं सव्वजहण्णं णाणं तं णोआगमभावजहण्णं। एत्थ ओघजहण्णकालेण पयदं, सव्वजहण्णट्ठिदीए अहियारादो।

उक्कस्सं चउव्विहं णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावउक्कस्सभेएण। तत्थ णाम ट्ठवणुक्कस्साणि सुगमाणि। दव्वुक्कस्सं दुविहमागमदव्वुक्कस्सं णोआगमदव्वुक्कस्सं चेदि। तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वुक्कस्सं। णोआगमदव्वुक्कस्सं तिविहं जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तणोआगमदव्वुक्कस्सभेएण। जाणुगसरीरभवियणोआगमदव्वुक्कस्साणि सुगमाणि। तव्वदिरित्तणोआगमदव्वुक्कस्सं दुविहं- ओघुक्कस्समादेसुक्कस्स चेदि। तत्थ ओघुक्कस्सं चउव्विहं- दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि। तत्थ दव्वदो उक्कस्सं महाखंधो। खेत्तदो उक्कस्समागासं। कालदो उक्कस्सं सव्वकालो। भावदो उक्कस्सं

वाले स्कन्धकी अपेक्षा दो प्रदेशवाला स्कन्ध आदेशद्रव्यजघन्य है। इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये। तीन प्रदेशोंमें अवगाहन करनेवाले द्रव्यकी अपेक्षा दो प्रदेशोंमें अवगाहन करनेवाला द्रव्य क्षेत्रसे आदेशजघन्य है। इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये। तीन समयोंमें परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो समयोंमें परिणत द्रव्य आदेशसे कालजघन्य है। इसी प्रकार शेष समयोंमे भी ले जाना चाहिये। तीन गुणोंमें परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो गुणोंमें परिणत द्रव्य भावसे आदेशजघन्य है।

भावजघन्य दो प्रकार है- आगमभावजघन्य और नोआगमभावजघन्य। उनमें जघन्य प्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावजघन्य है। सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तकका जो सबसे जघन्य ज्ञान है वह नोआगमभावजघन्य है। यहां ओघजघन्यकाल प्रकृत है, क्योंकि, यहां सर्वजघन्य स्थितिका अधिकार है।

नाम, स्थापना, द्रव्य और भावके भेदसे उत्कृष्ट चार प्रकार है। उनमें नामउत्कृष्ट और स्थापनाउत्कृष्ट सुगम हैं। द्रव्य उत्कृष्ट दो प्रकार है आगमद्रव्य उत्कृष्ट और नोआगमद्रव्य उत्कृष्ट। उनमें उत्कृष्ट प्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यउत्कृष्ट है। नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट तीन प्रकार है। ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट। इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट सुगम हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट दो प्रकार है - ओघउत्कृष्ट और आदेशउत्कृष्ट। उनमें ओघउत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है। उनमें द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट महा स्कन्ध है। क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट आकाश है। कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट सर्व काल है। भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट सर्वोत्कृष्ट वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शसे युक्त द्रव्य है।

सव्वुक्कस्सवण्ण-गंध-रस-फासदव्वं। आदेसुक्कस्सं चउव्विहं– दव्वदो खेत्तदो कालादो भावदो चेदि। तत्थ दव्वदो एगपरमाणुं दट्ठूण दुपदेसिओ खंधो आदेसुक्कस्सं। दुपदेसियं खंधं दट्ठूण तिपदेसियक्खंधो वि आदेसुक्कस्सं। एवं सेसेसु वि णेयव्वं। खेत्तदो एयखेत्तं दट्ठूण दोखेत्तपदेसा आदेसदो उक्कस्सखेत्तं। एवं सेसेसु वि णेयव्वं। कालदो एगसमयं दट्ठूण दोसमइयं आदेसुक्कस्सं। एवं सेसेसु वि णेयव्वं। भावदो एगगुणजुत्तं दट्ठूण दुगुणजुत्तं दव्वमोदसुक्कस्सं। एवं सेसेसु वि णेयव्वं। भावुक्कस्सं दुविहं– आगम-णोआगमभावुक्कस्सभेएण। तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावुक्कस्सं। णोआगमभावुक्कस्सं केवलणाणं। एत्थ ओघकालुक्कस्सेण अहियारो। एत्थ कालदो ओघुक्कस्सं सव्वकालो त्ति भणिदं, तस्सेत्थ गहणं ण कायव्वं; कम्मट्ठिदीए तदसंभवादो। जहण्णपदे एगं सामित्तं अण्णेगमुक्कस्सपदे, एवं सामित्तं दुविहं चेव होदि; अण्णस्सासंभवादो।

सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा कालदो उक्कस्सिया कस्स ? ॥ ७ ॥

उक्कस्सपदणिद्देसो जहण्णपदपडिसेहफलो। णाणावरणणिद्देसो सेसकम्मपडिसेहफलो।

आदेशउत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है। उनमें एक परमाणुकी अपेक्षा दो प्रदेशवाला स्कन्ध द्रव्यकी अपेक्षा आदेशउत्कृष्ट है। दो प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला स्कन्ध भी द्रव्यसे आदेशउत्कृष्ट है। इसी प्रकार शेष प्रदेशोंके विषयमें ले जाना चाहिये। एक प्रदेश रूप क्षेत्रकी अपेक्षा दो क्षेत्रप्रदेश क्षेत्रसे आदेशउत्कृष्ट हैं। इसी प्रकार शेष क्षेत्रप्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये। एक समयकी अपेक्षा दो समय परिणत द्रव्य कालसे आदेशउत्कृष्ट है। इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये। एक गुण युक्त द्रव्यकी अपेक्षा दो गुण युक्त द्रव्य भावसे आदेशउत्कृष्ट है। इसी प्रकार शेष गुणोंमें भी ले जाना चाहिये।

भावउत्कृष्ट आगमभावउत्कृष्ट और नोआगमभावउत्कृष्टके भेदसे दो प्रकार है। उनमें उत्कृष्ट प्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावउत्कृष्ट है। नोआगमभावउत्कृष्ट केवलज्ञान है। यहां ओघउत्कृष्ट कालका अधिकार है। यहां कालकी अपेक्षा ओघउत्कृष्ट सब काल कहा गया है, उसका यहां ग्रहण नहीं करना चाहिये; क्योंकि, कर्मस्थितिमें उसकी सम्भावना नहीं है। एक स्वामित्व जघन्य पदमें और दूसरा एक उत्कृष्ट पदमें, इस प्रकार स्वामित्व दो प्रकार ही है; क्योंकि, इनके अतिरिक्त और दूसरे स्वामित्वकी सम्भावना नहीं है।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है ? ॥ ७ ॥

सूत्रमें उत्कृष्ट पदका निर्देश जघन्य पदके प्रतिषेधके लिये किया गया है। ज्ञानावरण पदका निर्देश शेष कर्मोंके प्रतिषेधके लिये है। कालका निर्देश क्षेत्र आदिका

कालणिद्देसो खेत्तादिपडिसेहफलो । कस्से त्ति किं देवस्स किं णेरइयस्स किं मणुस्सस्स किं तिरिक्खस्से त्ति पुच्छा ।

अण्णदरस्स पंचिंदियस्स सण्णिस्स मिच्छाइट्ठिस्स सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स कम्मभूमियस्स अकम्मभूमियस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा संखेज्जवासाउअस्स वा असंखेज्जवासाउअस्स वादेवस्स वा मणुस्सस्स वा तिरिक्खस्स वा णेरइयस्स वा इत्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णउंसयवेदस्स वा जलचरस्स वा थलचरस्स वा खगचरस्स वा सागार-जागार-सुदोवजोगजुत्तस्स उक्कस्सियाए ट्ठिदीए उक्कस्सट्ठिदिसंकिलेसे वट्टमाणस्स, अधवा ईसिमज्झिमपरिणामस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा कालदो उक्कस्सा ॥ ८ ॥

अण्णदरस्से त्ति णिद्देसो ओगाहणादीणं पडिसेहाभावपदुप्पायणफलो । पंचिंदियस्से त्ति णिद्देसो विगलिंदियपडिसेहफलो? णाणावरणीयस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं पंचिंदिया चेव बंधंति, णो विगलिंदिया इदि जं वुत्तं होदि । ते च पंचिंदिया दुविहा- सण्णिणो अस-

---

प्रतिषेध करनेवाला है । 'किसके होती है' इससे वह क्या देवकी होती है, क्या नारकीके होती है, क्या मनुष्यके होती है, और क्या तिर्यंचके होती है, इस प्रकार पृच्छा की गई है ।

अन्यतर पंचेन्द्रिय जीवके- जो संज्ञी है, मिथ्यादृष्टि है, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त है; कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज अथवा कर्मभूमिप्रतिभागोत्पन्न है; संख्यातवर्षायुष्क अथवा असंख्यातवर्षायुष्क है; देव, मनुष्य, तिर्यंच अथवा नारकी है; स्त्रीवेद, पुरुषवेद अथवा नपुंसकवेदमेंसे किसी भी वेदसे संयुक्त है; जलचर अथवा नभचर है; साकार उपयोगवाला है जागृत है, श्रुतोपयोगसे युक्त है, उत्कृष्ट स्थिति के बन्ध योग्य उत्कृष्ट स्थितिसंक्लेशमें वर्तमान है, अथवा कुछ मध्यम संक्लेश परिणामसे युक्त है, उसके ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ ८ ॥

सूत्रमें अन्यतर पदका निर्देश अवगाहना आदिकोंके प्रतिषेधके अभावको सूचित करता है । पचेन्द्रिय पदका निर्देश विकलेन्द्रियका प्रतिषेध करता है । इससे यह फलित होता है कि ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिको पंचेन्द्रिय जीव ही बांधते हैं, विकलेन्द्रिय नहीं बांधते । वे पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं -- संज्ञी और असंज्ञी

ण्णिणो चेदि। तत्थ असण्णिणो उक्कस्सियं ट्ठिदिं ण बंधंति त्ति जाणावणट्ठं सण्णिस्से त्ति णिद्दिट्ठं। ते च सण्णिपंचिंदिया गुणट्ठाणभेएण चोद्दसविहा। तत्थ सासणादओ उक्कस्सियं ट्ठिदिं ण बंधंति त्ति जाणावणट्ठं मिच्छाइट्ठिस्से त्ति णिद्दिट्ठं। ते च मिच्छाइट्ठिणो पज्जत्तयदा अपज्जत्तयद चेदि दुविहा तत्थ अपज्जत्तयदा उक्कस्सियं ट्ठिदिं ण बंधंति त्ति जाणावणट्ठं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्से त्ति भणिदं। पंचिंदियपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो कम्मभूमा अकम्मभूमा चेदि दुविहा। तत्थ अकम्मभूमा उक्कस्सट्ठिदिं ण बंधंति, पण्णारसकम्मभूमीसु उप्पण्णा चेव उक्कस्सट्ठिदिं बंधंति त्ति जाणावणट्ठं कम्मभूमियस्स वा त्ति भणिदं। भोगभूमीसु उप्पण्णाणं व देव-णेरइयाणं सयंपहणगेंदपव्वदस्स बाहिरभागप्पहुडि जाव सयंभूरमणसमुद्दो त्ति एत्थ कम्मभूमिपडिभागम्मि उप्पण्णतिरिक्खाणं च उक्कस्सट्ठिदिबंधपडिसेहे पत्ते तण्णिराकरणट्ठं अकम्मभूमिस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा त्ति भणिदं। अकम्मभूमिस्स वा त्ति उत्ते देव-णेरइया घेत्तव्वा। कम्मभूमिपडिभागस्स वा त्ति उत्ते सयंपहणगिंदपव्वदस्स बाहिरे भागे समुप्पण्णाणं गहणं। संखेज्जवासाउअस्स वा त्ति उत्ते अड्ढाइज्जदीव-समुद्दुप्पण्णस्स कम्मभूमिपडिभागुप्पण्णस्स च गहणं। असंखेज्जवासाउअस्स वा त्ति उत्ते देव-णेरइयाणं गहणं, ण समयाहियपुव्वकोडिप्पहुडिउवरिमआउअतिरिक्ख-मणुस्साणं गहणं, पुव्वसुत्तेण तेसिं विहिदपडिसेहत्तादो। देवणेरइएसु

उनमें असंज्ञी पंचेन्द्रिय उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ संज्ञी पदका निर्देश किया है। वे संज्ञी पंचेन्द्रिय गुणस्थानोंके भेदसे चौदह प्रकार है। उनमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदिक उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं इस बातके ज्ञापनार्थ मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश किया है। वे मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो प्रकार हैं। उनमें अपर्याप्तक उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ 'सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ' ऐसा कहा है। पंचेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टि कर्मभूमिज और अकर्मभूमिज इस तरह दो प्रकारके हैं। उनमें अकर्मभूमिज उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं; किन्तु पन्द्रह कर्मभूमियोंमें उत्पन्न हुए जीव ही उत्कृष्ट स्थितिको बांधते हैं; इस बातके ज्ञापनार्थ 'कर्मभूमिज' पदका निर्देशकिया है। भोगभूमियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके समान देव-नारकियोंके तथा स्वयंप्रभ पर्वतके बाह्य भागसे लेकर स्वयम्भूरमण समुद्र तक इस कर्मभूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुए तिर्यंचोंके भी उत्कृष्ट स्थितिके बंधका प्रतिषेध प्राप्त होनेपर उसका निराकरण करनेके लिये 'अकर्मभूमिजके अथवा कर्मभूमिप्रतिभागोत्पन्न जीवके' ऐसा कहा है। अकर्मभूमिज पदसे देव-नारकियोंका ग्रहण करना चाहिये। कर्मभूमिप्रतिभाग पदका निर्देश करनेपर स्वयंप्रभ पर्वतके बाह्य भागमें उत्पन्न हुए जीवोंका ग्रहण किया गया है। 'संख्यातवर्षायुष्क' कहनेपर अढाई द्वीप-समुद्रोंमें उत्पन्न हुए तथा कर्मभूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुए जीवका ग्रहण करना चाहिये। 'असंख्यातवर्षायुष्क' से देव-नारकियोंका ग्रहण किया गया है। इस पदसे एक समय अधिक पूर्वकोटि आदि उपरिम आयु-विकल्पोंसे संयुक्त तिर्यंचों व मनुष्योंका ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, पूर्व सूत्रसे उनका

संखेज्जवासाउआणं कथमसंखेज्जवासाउअत्तमिदि भणिदे सच्चं ण ते असंखेज्जवासाउआ, किंतु संखेज्जवासाउआ चेव; समाहिय✲पुव्वकोडिप्पहुडिउवरिमआउअवियप्पाणं असंखेज्जवासाउअत्तब्भुवगमादो। कधं समयाहियपुव्वकोडीए संखेज्जवासाए असंखेज्जवासत्तं ? ण, रायरुक्खो व रूढिवलेण परिचत्तसगट्ठस्स असंखेज्जवस्ससहस्स✲ आउअविसेसम्मि वट्टमाणस्स गहणादो ।

चउग्गइसण्णिपंचिंदियपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणं उक्कस्सट्ठिदिबंधपडिसेहो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं देवस्स वा मणुस्सस्स वा तिरिक्खस्स वा णेरइयस्स वा त्ति उत्तं । तिसु वि वेदेसु उक्कस्सट्ठिदिबंधपडिसेहो णत्थि त्ति जाणावणट्ठमित्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णउंसयवेदस्स वा त्ति भणिदं । चरणविसेसाभावपदुप्पायणट्ठं जलचरस्स वा थलचरस्स वा खगचरस्स वा त्ति भणिदं । तत्थ मच्छ-कच्छवादओ जलचरा, सीह✲-वय-वग्घादओ थलचरा, गद्ध-ढेंक-सेणादओ खगचरा । दंसणोवजोगजुत्ता उक्कस्सट्ठिदिं ण बंधंति, णाणोवजोगजुत्ता चेव बंधंति त्ति जाणावणट्ठं सागारणिद्देसो कदो। सुत्तो उक्कस्सट्ठिदिं ण बंधदि, जग्गंतो

प्रतिषेध किया जा चुका है ।

शंका— देव तथा नारकियोंमें जो संख्यातवर्षायुष्क हैं उनका फिर असंख्यातवर्ष आयुष्कपना कैसे बनेगा ?

समाधान— इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि जो संख्यातवर्षायुष्क देव हैं, वे असंख्यातवर्षायुष्क नहीं हैं; परन्तु संख्यातवर्षायुष्क ही हैं। परन्तु यहांपर एक समय अधिक आदि पूर्वकोटिको लेकर आगेके आयुविकल्पोंको असंख्यातवर्षायुके भीतर स्वीकार किया गया है ।

शंका— एक समय अधिक पूर्वकोटिके संख्यातवर्षरूपता होते हुए भी असंख्यातवर्षरूपता कैसे सम्भव है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, राजवृक्ष (वृक्ष विशेष) के समान ' असंख्यातवर्ष ' शब्द रूढि वश अपने अर्थको छोडकर आयुविशेषमें रहनेवाला यहां ग्रहण किया गया है ।

चारों गतियोंके संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका प्रतिषेध नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ देवके, मनुष्यके, तिर्यंचके अथवा नारकीके, ऐसा कहा है । तीनों ही वेदोंमें उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका प्रतिषेध नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ ' स्त्रीवेदीके, पुरुषवेदीके अथवा नपुंसकवेदीके ' ऐसा कहा है। चरण अर्थात् गमनविशेषका अभाव बतलानेके लिये ' जलचरके, थलचरके अथवा नभचरके ' ऐसा कहा है । उनमें मत्स्य और कच्छप आदि जीव जलचर; सिंह, वृक और वाघ आदि थलचर; तथा गृद्ध, ढेंक और श्येन आदि नभचर जीव हैं । दर्शनोपयोगसे सहित जीव उत्कृष्टस्थितिको नहीं बांधते हैं, किन्तु ज्ञानोपयोग युक्त जीव ही उसे बांधते हैं; इस बातके जतलानेके लिये ' साकार ' पदका निर्देश किया गया है । सोया हुआ जीव उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधता है, किन्तु जागृत जीव ही

✲ ताप्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु ' समाहिय ' इति पाठः। ✲ प्रतिषु '-सदस्स ', ताप्रतौ ' सद (ह)स्स ' इति पाठः।
✲ ताप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः ' जलचररा सीह- '; आप्रतौ ' जलचररासि सीह- ' इति पाठः ।

चेव बंधदि त्ति जाणावणट्ठं जागारग्गहणं कदं। सुदोवजोगजुत्तो चेव उक्कस्सट्ठिदिं बंधदि, ण मदिउवजोगजुत्तो त्ति जाणावणट्ठं सुदोवजोगजुत्तस्से त्ति भणिदं।

उक्कस्सियाए ट्ठिदीए बंधपाओग्गसंकिलेसट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि अत्थि। तत्थ चरिमसंकिलेसट्ठाणेण उक्कस्सट्ठिदिं बंधदि त्ति जाणावणट्ठं उक्कस्सट्ठिदीए उक्कस्सट्ठिदिसंकिलेसे ✠ वट्टमाणस्से त्ति भणिदं। उक्कस्सट्ठिदिबंधपाओग्गसेससंकिलेसट्ठाणेहि उक्कस्सट्ठिदिबंधस्स पडिसेहे पत्ते तेहि वि बंधदि त्ति जाणावणट्ठं ईसिमज्झिमपरिणामस्से त्ति उत्तं। अधवा, उक्कस्सट्ठिदिबंधपाओग्गअसंखेज्जलोगमेत्तसंकिलेसट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखंडाणि कादूण तत्थ चरिमखंडस्स उक्कस्सट्ठिदिसंकिलेसो णाम। तत्थ वट्टमाणस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो होदि। सेसदुचरिमादिखंडेहि उक्कस्सट्ठिदिबंधपडिसेहे पत्ते तेहि वि उक्कस्सट्ठिदिबंधो होदि त्ति जाणावणट्ठमीसिमज्झिमपरिणामस्से त्ति उत्तं। एवंविहेण जीवेण णाणावरणीयस्स तीसंसागरोवमकोडाकोडिट्ठिदिबंधे पबद्धे तस्स णाणावरणीयवेयणा कालदो उक्कस्सा।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सा ॥ ९ ॥

उसे बांधता है; इस बातके ज्ञापनार्थ 'जागृत' पदका ग्रहण किया है। श्रुतोपयोग युक्त जीव ही उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है, न कि मतिउपयोग युक्त जीव; इस बातके ज्ञापनार्थ 'श्रुतोपयोग युक्त जीवके' ऐसा कहा है।

उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य संक्लेशस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं। उनमेंसे अन्तिम संक्लेशस्थानके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है, इस बातके ज्ञापनार्थ 'उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य उत्कृष्ट स्थितिसंक्लेशमें वर्तमान' ऐसा कहा है। अब इससे उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य शेष संक्लेशस्थानोंके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका निषेध प्राप्त होनेपर उनसे भी उक्त स्थितिको बांधता है, इस बातको जतलानेके लिए 'कुछ मध्यम परिणामोंसे युक्त जीवके' ऐसा कहा गया है। अथवा, उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य असंख्यात लोक प्रमाण संक्लेशस्थानोंके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र खण्ड करके उनमें अन्तिम खण्डका नाम उत्कृष्ट स्थितिसंक्लेश है। इस अन्तिम खण्डमें रहनेवाले जीवके उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध होता है। अब इससे शेष द्विचरम आदिक खण्डोंके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका प्रतिषेध प्राप्त होनेपर उनसे भी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध होता है, इस बातके ज्ञापनार्थ 'कुछ मध्यम परिणामोंसे युक्त जीवके' ऐसा कहा है। उपर्युक्त विशेषणोंसे विशिष्ट जीवके द्वारा ज्ञानावरणीयके तीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण स्थितिबन्धके बांधनेपर उसके ज्ञानावरणीयकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है।

उससे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना होती है। ९॥

✠ प्रतिषु 'उक्कस्सए ट्ठिदिसंकिलेसे' इति पाठः।

तदो वदिरित्तं तव्वदिरित्तं, उक्कस्सट्ठिदिबंधवदिरित्ता✽ अणुक्कस्सट्ठिदिवेयणा होदि त्ति उत्तं होदि। सा च अणेयप्पयारा त्ति तिस्से सामिणो वि अणेयविहा होंति। तेसिं परूवणं कस्सामो। तं जहा- तिण्णिवाससहस्समाबाधं कादूण तीसंसागरोवम-कोडाकोडिट्ठिदीए पबद्धाए उक्कस्सट्ठिदी होदि। पुणो अण्णेण जीवेण समऊणतीसं-सागरोवमकोडाकोडीसु बद्धासु पढममणुक्कस्सट्ठाणं होदि। एत्थ उक्कस्सट्ठिदिपमाणं संदिट्ठीए चत्तालीसरूवाहियदुसदमेत्तं ।२४०।। अणुक्कस्सुक्कस्सट्ठिदीए गुणचालीस-रूवाहियदुसदमेत्ता ।२३९।। तदो अण्णेण जीवेण दुसमऊणुक्कस्सट्ठिदीए पबद्धाए बिदियमणुक्कस्सट्ठाणं होदि। तस्स पमाणमेदं ।२३८।। एदेण कमेण आबाधाकंडए-णूणउक्कस्सट्ठिदीए पबद्धाए अण्णमणुक्कस्सट्ठाणं होदि। एत्थ आबाधाकंडयपमाणं तीसरूवाणि ।३०।। एदम्मि उक्कस्सट्ठिदिम्मि सोहिदे तदित्थट्ठिदिबंधट्ठाणमेत्तियं होदि ।२१०।।

संपहि उक्कस्साबाहा समऊणा होदि। कुदो? आबाहाचरिमसमए पढमणिसेयणिवा-दादो। संदिट्ठीए उक्कस्साबाधापमाणमट्ठ ।८।। पुणो समयाहियआबाधाकंडएणूण-उक्कस्सट्ठिदीए पबद्धाए सो अण्णो अणुक्कस्सट्ठाणबियप्पो होदि ।२०९।। एदेण कमेण दोआबाधाकंडएहि ऊणुक्कस्सट्ठिदीए पबद्धाए सो अण्णो अणुक्कस्सट्ठिदिवियप्पो ।१८०।।

उससे व्यतिरिक्त अर्थात् उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे भिन्न अनुत्कृष्ट स्थितिवेदना होती है, यह सूत्रका अर्थ है। वह चूंकि अनेक प्रकारकी है, अतः उसके स्वामी भी अनेक प्रकारके हैं। उनकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है-- तीन हजार वर्ष आबाधा करके तीस कोडा-कोडि सागरोपम मात्र स्थितिके बांधनेपर उत्कृष्ट स्थिति होती है। फिर अन्य जीवके द्वारा एक समय कम तीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण स्थितिके बांधनेपर प्रथम अनुत्कृष्ट स्थान होता है। यहांपर उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण संदृष्टिमें दो सौ चालीस (२४०) अंक है। अनु-त्कृष्ट उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण दो सौ उनतालीस (२३९) अंक है। उससे अन्य जीवके द्वारा दो समय कम उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर द्वितीय अनुत्कृष्ट स्थान होता है। उसका प्रमाण यह है-- २३८। इस क्रमसे आबाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर अन्य अनुत्कृष्ट स्थान होता है। यहां आबाधाकाण्डकका प्रमाण तीस अंक (३०) है। इसको उत्कृष्ट स्थिति-मेंसे घटा देनेपर वहांका स्थितिबन्धस्थान इतना होता है-- २४० - ३० = २१०।

अब उत्कृष्ट आबाधा एक समय कम हो जाती है, क्योंकि, आबाधाके अन्तिम समयमें प्रथम निषेक निर्जीर्ण हो चुका है। संदृष्टिमें उत्कृष्ट आबाधाका प्रमाण आठ (८) है। पश्चात् एक समय अधिक आबाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर वह अन्य अनुत्कृष्ट स्थानविकल्प होता है-- २४० - (३०+१) = २०९। इस क्रमसे दो आबाधाकाण्डकोंसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर वह अन्य अनुत्कृष्ट स्थिति--विकल्प होता है-- २४० - ६० = १८०। इस प्रकार इसी क्रमसे एक समय कम दो

✽ प्रतिषु 'बंधवदिरित्तो, इति पाठः।

एवमेदेण कमेण समऊण-बिसमऊणादिकमेण णिरंतरट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव समऊणाबाहकंडयब्भहियधुवट्ठिदि त्ति। तिस्से पमाणं सट्ठी। ६०।। एदम्हादो समऊण-बिसमऊणादिकमेण बंधाविय ओदारेदव्वं जाव सव्वविसुद्धसण्णिपंचिंदिय-धुवट्ठिदि त्ति। पुणो धुवट्ठिदिं बंधमाणस्स अण्णो अपुणरुत्तट्ठिदिवियप्पो होदि। एत्थ धुवट्ठिदिपमाणमेक्कत्तीसं। ३१।।

संपहि एदिस्से हेट्ठा सण्णिपंचिंदिएसु ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि ण लब्भंति। कुदो? सव्वविसुद्धेण सण्णिपंचिंदियपज्जत्तेण बद्धजहण्णट्ठिदीए जहण्णट्ठिदिसंतसमाणाए धुवट्ठिदि त्ति गहणादो। तदो पंचिंदिएसु ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एत्तियाणि चेव लब्भंति।

संपहि एदिस्से हेट्ठा बंधं मोत्तूण ट्ठिदिसंतं घाविय एइंदिएसु ट्ठिदिसंतट्ठाणपरूवणं कस्सामो। एत्थ संदिट्ठी—

००० १०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
००० १०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
००० १०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
००० १०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००
००० १०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००१०००

धुवट्ठिदि त्ति एक्कत्तीस। ३१।, एगट्ठिदिखंडे त्ति संदिट्ठीए चत्तारि। ४।, उक्कीरणकालो चत्तारि। ४।। एवं ट्ठविय ट्ठिदिट्ठाणुप्पत्तिं भणिस्सामो। तं जहा—

एगो तसजीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियधुवट्ठिदिसंतकम्मेण एइंदिएसु पविट्ठो।

समय कम इत्यादि क्रमसे एक समय कम आबाधाकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थिति तक नरिन्तर स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये। उसका प्रमाण साठ (३० − १ = २९; ३१ + २९ = ६०) है। इसमेंसे एक समय कम दो समय कम इत्यादि क्रमसे बन्ध कराकर सर्वविशुद्ध संज्ञी पंचेन्द्रियकी ध्रुवस्थिति तक उतारना चाहिये। पश्चात् ध्रुवस्थितिको बांधनेवाले जीवका अन्य अपुनरुक्त स्थितिविकल्प होता है। यहां ध्रुवस्थितिका प्रमाण इकतीस (३१) है।

अब इसके नीचेके स्थितिबन्धस्थान संज्ञी पंचेन्द्रियोंमें नहीं पाये जाते हैं, क्योंकि, सर्वविशुद्ध संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवके द्वारा बांधी गई जघन्य स्थितिसत्त्व समान जघन्य स्थितिको ध्रुवस्थिति रूपसे ग्रहण किया गया है। इसलिये पंचेन्द्रियोंमें स्थितिबन्धस्थान इतने ही पाये जाते हैं।

अब इसके नीचे बन्धको छोडकर स्थितिसत्वका घात करके एकेन्द्रियोंमें स्थितिसत्त्व-स्थानोंकी प्ररूपणा करते हैं। यहां संदृष्टि (मूलमें देखिये)। संदृष्टिमें ध्रुवस्थितिका प्रमाण ३१, एक स्थितिकाण्डकका प्रमाण ४, और उत्कीरणकालका प्रमाण ४ है। इस प्रकार स्थापित करके स्थितिस्थानौंकी उत्पत्तिको कहते हैं। यथा—

एक त्रस जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक ध्रुवस्थितिसत्त्वसे

पुणो बिदिओ जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियसमयाहियधुवट्ठिदीए सह एइंदिएसु उववण्णो। तदो अण्णो तदिओ जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियदुसमयाहियधुवट्ठिदीए सह एइंदिएसु उववण्णो। पुणो चउत्थो जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियतिसमयाहियधुवट्ठिदीए सह एइंदिएसु उववण्णो। पुणो अण्णो जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए चदुसमयाहियधुवट्ठिदीए च एइंदिएसु उववण्णो। एवं समऊणुक्कीरणद्धाए एगेगसमयाहियधुवट्ठिदीए च ताव उप्पादेदव्वं जाव समऊणुक्कीरणद्धाए एगसगलट्ठिदिखंडएण च अब्भहियधुवट्ठिदीए एइंदिएसु पविट्ठो त्ति। एवं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवा एगसमएण एइंदिएसु पवेसिदव्वा।

पुणो एदेसु रूवाहियट्ठिदिकंडयमेत्तजीवेसु ट्ठिदिघादं करेमाणेसु धुवट्ठिदीए हेट्ठा ट्ठिदिसंतट्ठाणुप्पत्तीए भण्णमाणाए समऊणुक्कीरणद्धाए अहियधुवट्ठिदीए सह एइंदिएसु उप्पण्णेण पढमफालिए पादिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। एवं ट्ठिदिसंतट्ठाणं पुणरुत्तं, धुवट्ठिदीए उवरि समुप्पत्तीदो। पुणो बिदियफालिपदिदसमए चेव उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। एवं पि पुणरुत्तं चेव। एवं* णेदव्वं जाव ट्ठिदिखंडयचरिमफालिमपादिय उक्कीरणद्धाए चरिमसमयं धरेदूण ट्ठिदो त्ति। पुणो एदमेवं** चेव ट्ठविय समऊणु-

---

एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट हुआ। फिर दूसरा जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और एक समयसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ। उससे अन्य तीसरा जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और दो समयोंसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ। पुनः चतुर्थ जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और तीन समयोंसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ। पुनः अन्य जीव एक समय कम उत्कीरणकाल और चार समय अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल और एक एक समय अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एक समय कम उत्कीरणकाल और एक संपूर्ण स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट होने तक उत्पन्न कराना चाहिये। इस प्रकार पल्योपमके असख्यातवें भाग मात्र जीवोंको एक समयसे एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट कराना चाहिये।

पुनः एक अधिक स्थितिकाण्डक मात्र इन जीवोंके द्वारा स्थितिघात करते रहनेपर ध्रुवस्थितिके नीचे स्थितिसत्त्वस्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते समय एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिके पतित कराये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह स्थितिसत्त्वस्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, उसकी ध्रुवस्थितिके ऊपर उत्पत्ति है। पुनः द्वितीय फालिके पतित होनेके समयमें ही उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। इस प्रकार स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिको पतित न कराकर उत्कीरणकालके अन्तिम समयको लेकर स्थित जीव तक ले जाना चाहिये। फिर इसको इसी

---

* प्रतिषु 'एदं' इति पाठः।　　** प्रतिषु 'एवमेवं' इति पाठः।

वकीरणद्धाए सगलेगट्ठिदिखंडएण च अहियधुवट्ठिदीए एइंदिएसु उप्पण्णजीवेण पढम-फालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। एदं ट्ठिदिसंतट्ठाणं पुणरुत्तं होदि, धुवट्ठिदीदो अहियत्तादो। बिदियफालिपदिदसमए चेव उक्कीरणद्धाए बिदिय-समओ गलदि। एदं पि ट्ठाणं पुणरुत्तं चेव। तदियफालिपदिदसमए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि। ट्ठिदिसंतट्ठाणं पुणरुत्तं होदि। एवं णेदव्वं जाव अंतोमुहुत्तमेत्त-ट्ठिदिउक्कीरणसमयाणं दुचरिमसमओ त्ति। पुणो ट्ठिदिउक्कीरणकालचरिमसमए गलिदे पढमट्ठिदिखंडयस्स चरिमफाली पददि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि, धुवट्ठिदिं पेक्खिदूण समऊणट्ठाणादो।

पुणो समऊणुक्कीरणद्धाए समऊणट्ठिदिखंडएण च अहियधुवट्ठिदीए सह एइंदि-एसु उप्पण्णजीवेण पढमफालीए पदिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। एदं ट्ठाणं पुणरुत्तं होदि। बिदियफालीए सह उक्कीरणद्धाए बिदियसमए गलिदे वि पुण-रुत्तट्ठाणं होदि। तदियफालीए सह उक्कीरणद्धाए तदियसमए गलिदे वि पुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं णेदव्वं जाव समऊणुक्कीरणद्धाए पदिदाओ त्ति।

पुणो ट्ठिदिकंडयचरिमफालीए पदिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि। एदम-पुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो ? ट्ठिदिकंडयचरिमफालीए पदिदाए सेसट्ठिदिसंतं समऊणधुव-

---

प्रकार ही स्थापित करके एक समय कम उत्कीरणकाल और संपूर्ण एक स्थितिकाण्डकमे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिको पतित करानेपर उत्की-रणकालका प्रथम समय गलता है। यह स्थितिसत्त्वस्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, वह ध्रुवस्थितिसे अधिक है। द्वितीय फालिके पतित होनेके समयमें ही उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। तृतीय फालिके पतित होनेके समयमें उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थितिके उत्कीरणकालके समयोंमें द्विचरम समय तक ले जाना चाहिए। पश्चात् स्थितिउत्कीरणकालके अन्तिम समयमें गलनेपर प्रथम स्थिति-काण्डककी अन्तिम फालि पतित हो चुकती है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, ध्रुवस्थितिकी अपेक्षा यह स्थान एक समय कम है।

पुन: एक समय कम उत्कीरणकालसे और एक समय कम स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिके साथ उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिके पतित करानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह स्थान पुनरुक्त है। द्वितीय फालिके साथ उत्कीरणकालके द्वितीय समयके गलनेपर भी पुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल मात्र फालियोंके पतित होने तक ले जाना चाहिए।

तत्पश्चात् स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतित होनेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतित होनेपर शेष स्थितिसत्त्व एक समय कम ध्रुवस्थिति प्रमाण होकर फिर

ट्ठिदिमेत्तं होदूण पुणो उक्कीरणद्धाए चरिमसमए गलिदे उवगयदुसमऊणधुवट्ठिदित्तादो।

पुणो तदियजीवेण समऊणुक्कीरणद्धाए दुरूऊणट्ठिदिकंडएण च अब्भहियधुवट्ठिदिसंतकम्मिएण पढमट्ठिदिकंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। एसो अणुक्कस्सट्ठिदिवियप्पो पुणरुत्तो होदि। पुणो तेणेव बिदियफालीए अवणिदाए ट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। (एदं) ट्ठिदिट्ठाणं पुणरुत्तं होदि। तेणेव जीवेण पुणो तस्सेव ट्ठिदिखंडयस्स तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि। एवमेदेण कमेण समऊणुक्कीरणद्धामेत्तसमएसु गलिदेसु त्तेत्तियमेत्ताओ चेव फालीओ पदंति पुणरुत्तट्ठाणाणि च उप्पज्जंति। पुणो एदेणेव जीवेण पढमट्ठिदिखंडयस्स चरिमुक्कीरणसमएण सह चरिमफालीए अवणिदाए अपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो? सेसट्ठिदिसंतकम्मस्स त्तिरूवूणधुवट्ठिदिपमाणत्तदंसणादो।

पुणो चउत्थजीवेण समऊणुक्कीरणद्धाए तिरूऊणट्ठिदिखंडएण अहियधुवट्ठिदिसंतकम्मिएण पढमट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि, पुणरुत्तट्ठिदिट्ठाणमुप्पज्जदि। पुणो तेणेव तस्स बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। एदं पि ट्ठाणं पुणरुत्तमेव। एवं समऊणुक्कीरण-

---

उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गल जानेपर दो समय कम ध्रुवस्थिति पायी जाती है।

पुनः एक समय कम उत्कीरणकाल और दो रूप कम स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिसत्त्व संयुक्त तृतीय जीवके द्वारा प्रथम स्थितिकाण्डक सम्बन्धी प्रथम फालिके अलग करनेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह अनुत्कृष्ट स्थितिविकल्प पुनरुक्त है। पश्चात् उसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग करनेपर स्थितिकाण्डकउत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह स्थितिस्थान पुनरुक्त है। उक्त जीवके द्वारा फिरसे उसी स्थितिकाण्डककी तीसरी फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका तीसरा समय गलता है। इस प्रकार इस क्रमसे एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण समयोंके गल जानेपर उतनी ही फालियां पतित होती हैं और पुनरुक्त स्थान उत्पन्न होते हैं। पश्चात् इसी जीवके द्वारा प्रथम स्थितिकाण्डकके अन्तिम समयके साथ अन्तिम फालीके अलग किये जानेपर अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, शेष स्थितिसत्त्व तीन रूपोंसे हीनध्रुवस्थिति प्रमाण देखा जाता है।

पुनः चतुर्थ जीवके द्वारा एक समय कम उत्कीरणकालसे और तीन समय कम स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिसत्वकर्मिक होकर प्रथम स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता हैं और पुनरुक्त स्थितिस्थान उत्पन्न होता है। पश्चात् उसी जीवके द्वारा उक्त स्थितिकाण्डककी द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त

द्धामेत्तपुणरुत्तट्ठाणेसु उप्पण्णेसु पुणो पढमट्ठिदिकंडयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि। ताधे अपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि। कुदो? घादिदसेसट्ठिदिसंतकम्मस्स चदुरूवूणधुवट्ठिदिपमाणत्तुवलंभादो। एवमेदेण कमेण ट्ठिदिखंडयमेत्तअपुणरुत्तट्ठाणाणि उप्पादिय पुणो उक्कीरणद्धाए चरिमसमएण सह चरिमफालिं धरेदूण ट्ठिदजीवेण चरिमफालीए अवणिदाए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो? घादिदसेसट्ठिदिसंतकम्मस्स रूवाहियट्ठिदिखंडएणूणधुवट्ठिदिपमाणत्तदंसणादो। एवं कदे रूवाहियट्ठिदिखंडयमेत्ताणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि हवंति। घादिदसेससव्वजहण्णट्ठिदिसंतकम्मं पेक्खिदूण पढमट्ठिदिखंडयं घादिय ट्ठविदसेसुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मं ट्ठिदिकंडयमेत्तेण अहियं होदि। पुणो एवं ट्ठिदिसंतकम्मट्ठाणाणं बिदियट्ठिदिकंडयमस्सिदूण अपुणरुत्तट्ठाणुप्पत्तिं वत्तइस्सामो। तं जहा- एगेगसमउत्तरकमेण ट्ठिदिसंतं धरेदूण ट्ठिदिरूवाहियकंडयमेत्तजीवेसु सव्वजहण्णट्ठिदिसंतकम्मिएण बिदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। ताधे अपुणरुत्तट्ठाणं उप्पज्जदि, पुव्विल्लट्ठिदिसंतकम्मादो एदस्स ट्ठिदिसंतकम्मस्स समऊणत्तदंसणादो। पुणो एदेणेव बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि। एदं पि अपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं✻ समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीओ पादिय सम-

स्थानोंके उत्पन्न होनेपर पुनः प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। तब अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, उस समय घातनेसे शेष रहा स्थितिसत्कर्म चार रूपोंसे कम ध्रुवस्थितिप्रमाण पाया जाता है। इस प्रकार इस क्रमसे स्थितिकाण्डकप्रमाण अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न कराके पश्चात् उत्कीरण-कालके अन्तिम समयके साथ अन्तिम फालिको लेकर स्थित जीवोंके द्वारा अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, घातनेसे शेष रहा स्थितिसत्कर्म एक अधिक स्थितिकाण्डकसे हीन ध्रुवस्थिति प्रमाण देखा जाता है। ऐसा करनेपर एक अधिक स्थितिकाण्डकके बराबर ही अपुनरुक्त स्थान प्राप्त होते हैं। घातनेसे शेष रहे समस्त जघन्य स्थितिसत्कर्मकी अपेक्षा प्रथम स्थितिकाण्डकका घात करके स्थापित किया हुआ शेष उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म स्थितिकाण्डक मात्रसे अधिक होता है।

अब इस प्रकारसे स्थितिसत्कर्मस्थानोंके द्वितीय स्थितिकाण्डकका आश्रय करके अपुनरुक्त स्थानोंकी उत्पत्तिको कहते हैं। यथा- एक एक समयकी अधिकताके क्रमसे स्थिति-सत्त्वको लेकर स्थित एक अधिक स्थितिकाण्डक मात्र जीवोंमेंसे सर्वजघन्यस्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरण-कालका प्रथम समय गलता है। उस समय अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि पूर्वके स्थितिसत्कर्मकी अपेक्षा यह स्थितिसत्कर्म एक समय कम देखा जाता है। फिर इसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल

✻ ताप्रतावतः प्राक् 'एवं समउणक्कीरणद्धामेत्तट्ठाणं होदि' इत्यधिकः पाठः।

ऊणुक्कीरणद्धामेत्ताणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि । पुणो उक्कीरणद्धाए चरिमसमएण बिदियट्ठिदिखंडयचरिमफालिं धरेदूण ट्ठिदं जीवमेवं चेव ट्ठविय पुणो एदेसु जीवेसु सव्वुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मिएण बिदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदं ठाणं पुणरुत्तं होदि । बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तमेव । एवं समऊणक्कीरणद्धामेत्तफालीओ जाव पदंति ताव पुणरुत्ताणि चेव ट्ठाणाणि उप्पज्जंति । पुणो एदेणेव बिदियट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कुदो ? पुव्वं ठविदूणागदट्ठिदिसंतकम्मं पेक्खिदूण एदस्स ट्ठिदिसंतकम्मस्स समऊणत्तदंसणादो । पुणो एदम्हादो बिदियजीवेण बिदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्तट्ठाणं होदि । बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तमेव । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीसु पदमाणियासु♠ पुणरुत्ताणि चेव ट्ठाणाणि उप्पज्जंति । पुणो एदेणेव बिदियट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एवं

प्रमाण फालियोंको अलग करके एकसमय कम उत्कीरणकाल प्रमाण ही अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये। पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयमें द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिको लेकर स्थित जीवको इसी प्रकार स्थापित करके फिर इन जीवोंमेंसे सर्वोत्कृष्ट स्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर प्रथम समय गलता है। यह स्थान पुनरुक्त है। द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियां जब तक अलग होती हैं तब तक पुनरुक्त ही स्थान उत्पन्न होते हैं। फिर इसी जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, पहिले स्थापित करके आये हुए स्थितिसत्कर्मकी अपेक्षा यह स्थितिसत्कर्म एक समय कम देखा जाता है।

तत्पश्चात् इस जीवकी अपेक्षा द्वितीय जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह पुनरुक्त स्थान होता है। द्वितीय फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीकरणकाल प्रमाण फालियोंके अलग होने तक पुनरुक्त ही स्थान उत्पन्न होते हैं। पश्चात् इसी जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। इस प्रकार अन्तिम समयके

♠ प्रतिषु 'पढमणियासु' इति पाठः।

(चरिमसमए) गलिदे एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि, चरिमफालीए पादिदाए पुव्विल्ल-जीवट्ठिदिसंतेण सेसट्ठिदिसंतं समाणं⊗ होदूण पुणो उक्कीरणद्धाए चरिमसमए गलिदे तत्तो समऊणं होदि त्ति । एदमत्थपदं उवरि सव्वत्थ वत्तव्वं ।

पुणो तत्तो तदियजीवेण बिदियट्ठिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरण-द्धाए पढमसमओ गलदि। गलिदे पुणरुत्तट्ठाणं होदि। बिदियफालीए अवणिदाए उक्की-रणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो तदियफालीए अवणि-दाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं समऊणुक्की-णद्धामेत्तफालीओ जाव पदंति ताव पुणरुत्तट्ठाणाणि चेव उप्पज्जंति । पुणो एदेणेव चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो ? चरिमफालीए पदिदाए पुव्विल्लट्ठिदिसंतकम्मेण सरिसत्तं प☼त्तस्स सेसट्ठिदिसंतकम्मस्स उक्कीरणद्धाए चरिमसमयगलणेण समऊणत्तदंसणादो ।

पुणो तत्तो चउत्थजीवेण बिदियट्ठिदिकंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए (बिदियसमओ गलदि । पुणो तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए) तदियसमओ गलदि। एदं पि पुणरुत्तट्ठाणं

गलनेपर यह अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, अन्तिम फालिके अलग होनेपर पूर्वोक्त जीवके स्थितिसत्त्वसे शेष स्थितिसत्त्व समान हो करके पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेपर उससे एक समय कम हो जाता है । यह अर्थपद आगे सब जगह कहना चाहिये ।

तत्पश्चात् उससे तीसरे जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । उसके गलनेपर पुनरुक्त स्थान होता है । द्वितीय फालिके नष्ट होनेपर उत्कीकरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । फिर तृतीय फालिके नष्ट होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । इस प्रकार जब तक एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियां पतित होती हैं तब तक पुनरुक्त स्थान ही उत्पन्न होते हैं । पश्चात् इसी जीवके द्वारा अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके पतित होनेपर पहिले जीवके स्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त हुआ शेष स्थितिसत्कर्म उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है।

पुनः उससे चतुर्थ जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका (द्वितीय समय गलता है । पश्चात् तृतीय फालिके विघटित

⊗ प्रतिषु 'सेसट्ठिदिसंतसमाणं' इति पाठः ।　☼ प्रतिषु 'भरिसत्तं ▼ पि तस्सेसट्ठिदिसंत-कम्मस्स'; ताप्रतौ 'सरिसत्तं पत्तसट्ठिदिसंतकम्मस्स' इति पाठः ।

होदि। एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीओ जाव पदंति ताव पुणरुत्ताणि चेव ट्ठाणाणि उप्पज्जंति। पुणो चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो? चरिमफालीए अवणिदाए पुव्विल्लट्ठिदिसंतकम्मेण सरिसत्तमुवगयस्स सेसट्ठिदिसंतकम्मस्स उक्कीरणद्धाचरिमसमयगलणेण समऊणत्तदंसणादो। एवमेदेण कमेण ट्ठिदिकंडयमेत्ताणि समऊणुक्कीरणद्धाए अहियाणि अपुणरुत्तट्ठिदिसंतट्ठाणाणि उप्पाइय पुणो पच्छा पुव्विल्लट्ठविदजीवादो अपुणरुत्तट्ठाणुप्पत्ती वत्तव्वा। तं जहा– तेण पुव्वणिरुद्धजीवेण चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो? चरिमफालीए पदिदाए पुव्विल्लट्ठिदिसंतकम्मेण सरिसत्तमुवगयस्स ट्ठिदिसंतकम्मस्स अधट्ठिदिगलणेण समऊणत्तदंसणादो। एवं बिदियपरिवाडी गदा।

संपहि तदियपरिवाडिं वत्तइस्सामो। तं जहा– एदेसु रूवाहियट्ठिदिकंडयमेत्तजीवेसु सव्वजहण्णट्ठिदिसंतकम्मिएण तदियट्ठिदिकंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि। एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि, अधट्ठिदिगलणेण पुव्विल्लट्ठिदिं पडुच्च समऊणत्तदंसणादो। चरिमफालिं मोत्तूण सेसफालीहिंतो ण पुणरुत्तट्ठाणं(१) उप्पज्जदि,

---

किये जानेपर उत्कीरणकालका) तृतीय समय गलता है। यह भी पुनरुक्तस्थान होता है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियां जब तक पतित होतीं हैं तब तक पुनरुक्त स्थान ही उत्पन्न होते हैं। पश्चात् अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, अन्तिम फालिके विघटित होनेपर पूर्वस्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त हुआ शेष स्थितिसत्कर्म उत्कीरणकाल संबंधी अन्तिम समयके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है। इस प्रकार इस क्रमसे स्थितिकाण्डक प्रमाण व एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक अपुनरुक्त स्थितिसत्त्वस्थानोंको उत्पन्न कराकर फिर पश्चात् पहिले स्थापित जीवकी अपेक्षा अपुनरुक्त स्थानोंकी उत्पत्ति कही जाती है। यथा– उक्त विवक्षित पूर्व जीवके द्वारा अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके विघटित होनेपर पहिलेके स्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त हुआ स्थितिसत्कर्म अधःस्थितिके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है। इस प्रकार द्वितीय परिपाटी समाप्त हुई।

अब तृतीय परिपाटीको कहते हैं। यथा–– इन एक अधिक स्थितिकाण्डक प्रमाण जीवोंमेंसे सर्वजघन्यस्थिसत्कर्मिक जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अधःस्थितिके गलनेसे पूर्वोक्त स्थितिकी अपेक्षा यह स्थिति एक समय कम देखी जाती है। अन्तिम फालिको छोड शेष फालियोंसे पुनरुक्त

---

(१) काप्रतौ 'सेसफालीहिंतो एगं पुणरुत्तट्ठाणं'